

## संक्षेपण

संक्षेपण का अर्थ है संक्षेपण का अर्थ है किसी वस्तु को संक्षेपण में बदलना या लिखना। इसके अर्थ में, किसी वस्तु में ही संक्षेपण करने की प्रक्रिया को ही संक्षेपण कहते हैं।

संक्षेपण की प्रक्रिया सारांश, आशय, अन्वय, भावार्थ इत्यादि के अन्तर्गत होती है। सारांश के संदर्भ का अर्थ अंश में लिखा जाता है। पर इसके आकार की सीमा निर्धारित नहीं होती। पर संक्षेपण में केवल केवल सारांश को नहीं, बल्कि आवश्यक बातों को क्रमानुसार रखा जाता है। इसके आकार की भी सीमा निर्धारित रहती है। सामान्यतः संक्षेपण संदर्भ का एक तिहाई होना चाहिए। दो चार शब्द अधिक या कम हो सकते हैं। आशय में संपीकृत की आवश्यकता होती है, पर संक्षेपण में इसकी गुंजाइश नहीं रहती। अन्वय में मुख्य और गौण दोनों प्रकार के तथ्यों को प्रकट किया जाता है पर संक्षेपण में तथ्यों पर इतना कम दिया जाता है। विचारों की संक्षिप्तता भावार्थ और संक्षेपण दोनों में रहती है किन्तु का विस्तार सीमा निश्चित रहती है जबकि (जैसा ऊपर कहा जा चुका है) संक्षेपण सीमाबद्ध होता है।

संक्षेपण के मुख्य तत्व :-

- (क) शीर्षक - मूल अवतरण की पढ़कर एक उपयुक्त शीर्षक दें। जैसे चैहरे के रंग को देखकर हृदय का भाव जान लिया जाता है। उसी तरह शीर्षक ऐसा होना चाहिए कि उसे पढ़ते ही यह समझ में आ जाय कि मूल अवतरण में किस बात पर प्रकाश डाला गया है। इमाण रखें, शीर्षक लम्बा न हो।
- (ख) संक्षेपण में मूल अवतरण की

लक्षणादी समुदाय की लक्षणानामि चाहिए और  
 सामान्यतया शब्दा भी। अतः संश्लेषणा कर्ता को मूल  
 अवतरण की तीन भाग लक्षणों को धरना चाहिए, फिर  
 शब्द को ग्रहण कर छोटे छोटे शब्दों को धरना चाहिए।  
 अर्थात् प्रथम ही अभावग्रहण प्रारम्भ का प्रयत्न नहीं  
 होना चाहिए। संश्लेषण लिखने के पहले लक्षण ही  
 सामान्यतया शब्दों की अवतरण प्रयत्न ही प्रारम्भ कर  
 लेनी चाहिए। सामान्यतया संश्लेषण की विद्यार ही  
 मूल अवतरण की 1/3 हीनी चाहिए।

(ग) चिरन्तन शब्द को प्रकट करने  
 वाले शब्दों को छोड़कर और लक्ष्मी कथन पर्यन्त  
 रूप में ही इतना सदा ध्यान रहे। दूसरे शब्दों  
 में कदा जा सकता है कि संश्लेषण सदा तृतीय  
 क्रम में लिखा जाना चाहिए।

(घ) वाक्य छोटे छोटे दो और  
 विचार की अभिव्यक्ति स्पष्ट हो, इस बात की  
 भी संश्लेषण लिखते समय ध्यान रहे।

### संश्लेषण के नियम :-

(क) संश्लेषण में मूल अवतरण में व्यक्त  
 विचारों का सारांश अपनी भाषा में प्रस्तुत करना  
 चाहिए। कथन के शब्दों का उही रूप में प्रयोग  
 नहीं होना चाहिए।

(ख) संश्लेषण की भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण  
 होनी चाहिए। वाक्य लघु एवं सुस्त तथा पुनरुक्ति  
 दोष से मुक्त हो।

(ग) संश्लेषण को अपने आप में पूर्ण होता  
 चाहिए। मूल में अलम्बित अंशों को सारांश में  
 रखना नहीं देना चाहिए। कोई महत्वपूर्ण अंश

संश्लेषण

इसका अर्थ है कि जो भी छोटे और साधारण अंश जुड़े हों, उनका सम्बन्ध रखना चाहिए।

(क) इसमें किसी प्रकार का आलोचनात्मक अंश नहीं होना चाहिए।

(ख) इसमें अत्यन्त गहन विचारों, आत्मशक्त हैं। इसके लिए महत्वपूर्ण विचार-विन्दुओं को इसमें निरूपित करना चाहिए।

(ग) उद्धरण से बचना चाहिए। यदि उद्धरण परमावश्यक है तो उसे सर्वमान्य और लघु होना चाहिए।

(घ) इसमें केन्द्रीय विचारों की प्रमुखता होनी चाहिए।

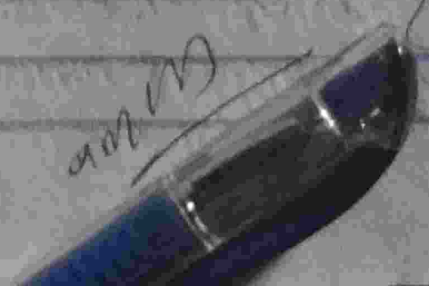
(ङ) संक्षेपण को मूल अवतरण का तृतीय अंश होना चाहिए। इसके लिए मूल अवतरण की आवश्यकता पूर्वक दो-तीन बार पढ़ लेना चाहिए तथा उनके मूल विचारों को हजामत में रखना चाहिए।

(च) किसी भी दस्तावेज में अपना मौखिक या स्वतंत्र विचार इसमें न जोड़ा जाय।

(ज) यदि निश्चित शब्द संख्या में संक्षेपण करने का निर्देश हो और वह संख्या एक निर्धारित अथवा न हो तब भी निर्धारित एवं निर्दिष्ट शब्द संख्या में ही संक्षेपण प्रस्तुत किया जाय।

डॉ. जलपुत्र  
हिंदी विभाग  
डॉ. एल.के.जी.जी. वि. सं. बल्लभ  
राजपुरा

एम.एम.



जलपुत्र